The Academic
International Journal of Multidisciplinary Research

An Online Peer Reviewed / Refereed Journal
Volume 3 | Issue 8 | August 2025
ISSN: 2583-973X (Online)
Website: www.theacademic.in

महाकौशल क्षेत्र में जनजातीय समुदायों का स्वाधीनता आंदोलन में योगदान

शुभम पटेल कुर्मी

इतिहास विभाग, सांची बौद्ध –भारतीय ज्ञान अध्ययन विश्वविद्यालय, मध्य प्रदेश, ईमेल- shubhamkurmi580@gmail.com

DOI : https://doi.org/10.5281/zenodo.17169488

ARTICLE DETAILS

Research Paper

Accepted: 27-08-2025

Published: 10-09-2025

Keywords:

महाकौशल, स्वाभिमान, रानी दुर्गावती, जनजातियाँ, सांस्कृतिक, ब्रिटिश।

ABSTRACT

महाकौशल क्षेत्र का स्वतंत्रता संग्राम जनजातीय अस्मिता, स्वाभिमान एवं अप्रतिहत वीरता का जीवंत प्रतीक है। 16वीं शताब्दी में रानी दुर्गावती ने मुगल आक्रांता आसफ खान के विरुद्ध अद्वितीय रणकौशल का परिचय देते हुए नर्रई के युद्ध में आत्मबलिदान किया, जिससे जनजातीय चेतना में स्वाधीनता की ज्वाला प्रज्वलित हुई। 1857 के प्रथम स्वतंत्रता समर में जबलपुर के गोंड सम्राट शंकर शाह एवं उनके पुत्र रघुनाथ शाह ने ब्रिटिश साम्राज्य के दमनकारी षड्यंत्रों का दृढ़ प्रतिरोध किया। इन राष्ट्रनायकों ने जनजातीय समुदाय को संगठित कर विद्रोह की व्यापक रणनीति निर्मित की, किंतु ब्रिटिश सत्ता ने उन्हें छलपूर्वक बंदी बनाकर निर्मम अत्याचारों का शिकार बनाया तथा 18 सितंबर 1857 को तोप के मुख से विस्फोटित कर उनका बलिदान कराया। यह क्रूरतम घटना जनजातीय संघर्ष की अमिट गाथा बनकर महाकौशल क्षेत्र में राष्ट्रवाद की प्रखर चेतना का स्तंभ बनी, जिसने स्वतंत्रता आंदोलन को तीव्रगति प्रदान की।

प्रस्तावना (Introduction)

भारतीय स्वाधीनता संग्राम केवल राजनीतिक संघर्ष न होकर सामाजिक, सांस्कृतिक एवं आर्थिक चेतना का प्रतिफल था। इस आंदोलन में समस्त समाज ने योगदान दिया, किंतु जनजातीय समुदायों की भूमिका ऐतिहासिक दृष्टि से प्रायः उपेक्षित रही है। विशेषतः महाकौशल क्षेत्र की जनजातियों ने औपनिवेशिक शोषण, कठोर कर नीति एवं परंपरागत अधिकारों के हनन के विरुद्ध अप्रतिम प्रतिरोध किया। ब्रिटिश शासन द्वारा थोपे गए कठोर वन कानूनों एवं आर्थिक दमन ने इनके जीवन को प्रतिकूल

रूप से प्रभावित किया, जिसके फलस्वरूप इन समुदायों ने संगठित विद्रोह किए। यह शोध पत्र महाकौशल क्षेत्र के जनजातीय स्वतंत्रता संग्राम में योगदान का ऐतिहासिक विश्लेषण प्रस्तुत करता है, जिससे उनकी वीरता एवं राष्ट्रभक्ति को इतिहास में उचित स्थान मिल सके।

महाकौशल भारत के मध्य क्षेत्र में विस्तृत एक ऐतिहासिक भूभाग है, जिसमें मध्य प्रदेश व छत्तीसगढ़ के भाग सम्मिलित हैं। यहाँ गोंड, बैगा, हल्बा, कोरकू व मुरिया जैसी जनजातियाँ निवास करती हैं, जो सांस्कृतिक धरोहर से समृद्ध हैं। इस क्षेत्र में रानी दुर्गावती ने मुगलों से वीरतापूर्वक संघर्ष किया, वहीं औपनिवेशिक काल में जनजातीय योद्धाओं ने अंग्रेजों को सशक्त चुनौती दी। प्राकृतिक संरचना एवं दुर्गम भूभाग के कारण विद्रोही गतिविधियों को बल मिला, जिससे सशस्त्र संघर्ष प्रभावी रूप में संचालित हो सके। शंकर शाह व रघुनाथ शाह जैसे वीरों के बलिदान इस तथ्य के साक्षी हैं कि महाकौशल की जनजातियाँ स्वतंत्रता संग्राम में अग्रणी रहीं।

इस शोध का मुख्य उद्देश्य महाकौशल के जनजातीय योद्धाओं के संघर्ष, उनके सामाजिक-आर्थिक परिस्थितियों एवं औपनिवेशिक सत्ता के विरुद्ध उनके संगठित प्रतिरोधों का गहन अध्ययन करना है। यह शोध ब्रिटिश शासन की दमनकारी नीतियों एवं जनजातीय विद्रोहों के ऐतिहासिक प्रभावों को भी विश्लेषित करेगा। साथ ही, यह अध्ययन स्पष्ट करेगा कि इन विद्रोहों ने भारतीय स्वतंत्रता संग्राम की दिशा को किस प्रकार प्रभावित किया। महाकौशल की जनजातियों ने केवल अपने अस्तित्व की रक्षा हेतु संघर्ष नहीं किया, अपितु राष्ट्रीय स्वतंत्रता आंदोलन को भी सशक्त किया। यह शोध पत्र उन उपेक्षित योद्धाओं को इतिहास में उचित स्थान दिलाने का प्रयास करेगा, जिससे भविष्य की पीढ़ियाँ उनके बलिदान से प्रेरणा ले सकें।

- स्वाधीनता आंदोलन में जनजातीय भूमिका का ऐतिहासिक परिप्रेक्ष्य

भारत के स्वतंत्रता संग्राम में जनजातीय समुदायों की भूमिका अत्यंत महत्वपूर्ण रही है। हालाँकि, मुख्यधारा के ऐतिहासिक विमर्श में इनका योगदान अपेक्षाकृत कम उल्लेखित किया गया है, लेकिन यह तथ्य निर्विवाद है कि भारत के वनांचलों और पर्वतीय क्षेत्रों में बसे जनजातीय समाजों ने अंग्रेजी शासन के विरुद्ध निरंतर संघर्ष किया। इन संघर्षों का स्वरूप केवल राजनीतिक स्वतंत्रता प्राप्त करने तक सीमित नहीं था, बल्कि यह औपनिवेशिक शोषण, जबरन कर प्रणाली, वन संपदा के नियंत्रण तथा पारंपरिक अधिकारों के हनन के विरुद्ध एक व्यापक विद्रोह का रूप था।

ब्रिटिश शासन ने भारतीय समाज के प्रत्येक वर्ग पर अपने दमनकारी नीतियों का प्रभाव डाला, किंतु जनजातीय समाज इससे विशेष रूप से प्रभावित हुआ। वन क्षेत्रों पर ब्रिटिश नियंत्रण ने उनकी आर्थिक और सामाजिक व्यवस्था को छिन्नभिन्न कर-दिया। औपनिवेशिक शासन ने जबरन कर वसूलने, जबरिया श्रम करवाने और उनके प्राकृतिक संसाधनों पर प्रतिबंध लगाने जैसी कठोर नीतियाँ लागू कीं। इससे आक्रोशित होकर भारत के विभिन्न भागों में जनजातीय विद्रोह फूट पड़े, जिन्होंने स्वाधीनता संग्राम में एक नया आयाम जोड़ा।

- भारत के विभिन्न भागों में जनजातीय विद्रोह

भारत के विभिन्न भागों में जनजातीय समाजों ने अलगअलग समय पर ब्रिटिश शासन के विरुद्ध संगठित संघर्ष किए। ये-विद्रोह कभी सामाजिक और सांस्कृतिक अस्तित्व की रक्षा हेतु थे, तो कभी पूर्णतः राजनीतिक उद्देश्यों से प्रेरित थे। इनमें से कुछ प्रमुख विद्रोह निम्नलिखित हैं—

1. **संथाल विद्रोह (1855-56) – सिद्धू-कान्हू का योगदान**

संथाल विद्रोह भारतीय जनजातीय संघर्षों में प्रथम संगठित क्रांति थी, जिसका नेतृत्व सिद्धू-कान्हू ने किया। ब्रिटिश कर नीति, महाजनी शोषण व जबरन श्रम के विरुद्ध संथालों ने सशस्त्र प्रतिरोध किया। इस विद्रोह की तीव्रता ने अंग्रेजों को सैन्य कार्रवाई हेतु विवश किया। यद्यपि संथाल योद्धाओं ने प्राणोत्सर्ग किया, किन्तु यह संघर्ष जनजातीय चेतना के जागरण का प्रेरक बना।

2. **मुंडा विद्रोह (1899-1900) – बिरसा मुंडा का योगदान**

बिरसा मुंडा ने जनजातीय उत्थान हेतु 'उलगुलान' (महाविद्रोह) का शंखनाद किया, जो केवल सशस्त्र संघर्ष ही नहीं, अपितु सामाजिक पुनर्जागरण का भी संकेत था। उनके नेतृत्व में आदिवासी समाज ने ब्रिटिश प्रशासन को कड़ी चुनौती दी, जिससे औपनिवेशिक सत्ता विचलित हुई।

3. **भील व कोल विद्रोह**

भीलों ने राजस्थान, मध्य प्रदेश व गुजरात में ब्रिटिश दमन के विरुद्ध निरंतर संघर्ष किया। कोल जनजातियों ने 1831-32 में संगठित विद्रोह कर औपनिवेशिक शासन को चुनौती दी। इन विद्रोहों के प्रतिशोधस्वरूप ब्रिटिश सत्ता ने भीषण दमन चक्र चलाया।

4. **तेलंगाना जनजातीय विद्रोह**

गोंड व कोया जनजातियों ने आंध्र व तेलंगाना में ब्रिटिश सत्ता तथा जमींदारी प्रथा के विरुद्ध विद्रोह किया। अल्लूरी सीताराम राजू के नेतृत्व में 1922-24 का रामप्पा आंदोलन औपनिवेशिक शासन के लिए गंभीर चुनौती बना।

ब्रिटिश शासन के खिलाफ जनजातीय संघर्ष

ब्रिटिश शासन के आगमन के साथ ही भारत के जनजातीय समुदायों का जीवन अस्तव्यस्त हो गया। उनके परंपरागत - जंगलों पर अधिकार छिन गए, उनकी आर्थिक व्यवस्था नष्ट हो गई, और उन पर भारी कर लगाए गए। ब्रिटिश सरकार ने जब जनजातियों के भूमि और प्राकृतिक संसाधनों पर नियंत्रण स्थापित किया, तो वे विद्रोह करने के लिए विवश हुए। इन संघर्षों का प्रमुख कारण निम्नलिखित थे—

1. **वन कानूनों की कठोरता** – ब्रिटिश सरकार ने जंगलों को अपने अधिकार में लेकर जनजातियों के परंपरागत अधिकारों को छीन लिया। इससे उनकी आर्थिक स्थिति कमजोर हो गई और वे विद्रोह के लिए बाध्य हुए।
2. **जबरन कराधान और महाजनी शोषण** – ब्रिटिश सरकार और स्थानीय जमींदारों द्वारा लगाए गए अत्यधिक कर और महाजनों द्वारा धन उधार देने के नाम पर शोषण ने जनजातीय समाज को बर्बादी के कगार पर पहुँचा दिया।
3. **धार्मिक और सांस्कृतिक दमन** – अंग्रेजों द्वारा मिशनरियों के माध्यम से जनजातियों का धर्मांतरण किया गया, जिससे उनकी पारंपरिक आस्थाओं और सांस्कृतिक मूल्यों को खतरा उत्पन्न हुआ।
4. **जबरी श्रम और सैन्य भर्ती** – ब्रिटिश सेना में जबरन भर्ती और औपनिवेशिक बुनियादी ढांचे सड़क), रेल, खदानोंके (ण हेतु जबरी श्रम के कारण जनजातीय समाज में असंतोष फैल गया।निर्मा

जनजातीय विद्रोहों के बावजूद, अंग्रेजी शासन ने जनजातीय समाज की मांगों की अनदेखी की और उन्हें क्रूरता से कुचलने का प्रयास किया। हालाँकि, इन संघर्षों ने भारतीय राष्ट्रीय आंदोलन को भी प्रभावित किया और स्वतंत्रता संग्राम को एक जनांदोलन बनाने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई।

महाकौशल क्षेत्र और उसकी जनजातीय संरचना

महाकौशल क्षेत्र की भौगोलिक स्थिति

महाकौशल क्षेत्र भारत के मध्य भाग में स्थित है, जो वर्तमान में मध्य प्रदेश और छत्तीसगढ़ के कुछ हिस्सों में विस्तृत है। यह क्षेत्र अपने प्राकृतिक संसाधनों, वन्य संपदा और सांस्कृतिक विविधता के लिए प्रसिद्ध है। भौगोलिक दृष्टि से, यह विंध्य और सतपुड़ा पर्वतमालाओं से घिरा हुआ है, जहाँ घने जंगल और अनेक नदियाँ प्रवाहित होती हैं, जिनमें नर्मदा, सोन, और महानदी प्रमुख हैं। इन नदियों ने क्षेत्र की कृषि व्यवस्था, जनजातीय जीवन और सांस्कृतिक विकास में महत्त्वपूर्ण भूमिका निभाई है।

महाकौशल क्षेत्र का ऐतिहासिक महत्व भी अत्यधिक है, क्योंकि यह प्राचीन काल से ही विभिन्न सभ्यताओं, राजवंशों और सांस्कृतिक गतिविधियों का केंद्र रहा है। यह क्षेत्र गोंडवाना साम्राज्य का भी हिस्सा रहा है, जहाँ जनजातीय समुदायों की सत्ता और सांस्कृतिक धरोहर का व्यापक प्रभाव देखा जाता है। ब्रिटिश शासनकाल में भी इस क्षेत्र की भौगोलिक स्थिति और प्राकृतिक संसाधनों के कारण इसे विशेष महत्त्व दिया गया था।

क्षेत्र में निवास करने वाली प्रमुख जनजातियाँ

महाकौशल क्षेत्र में अनेक जनजातियाँ निवास करती हैं, जो अपनी विशिष्ट परंपराओं, रीतिरिवाजों-, लोककथाओं, और जीवनशैली के लिए जानी जाती हैं। इस क्षेत्र की जनजातियाँ मुख्य रूप से आत्मनिर्भर जीवनशैली अपनाए हुए हैं और कृषि, शिकार, मछली पकड़ना तथा वनोपज संग्रह पर निर्भर रहती हैं। कुछ प्रमुख जनजातियाँ निम्नलिखित हैं—

1. **गोंड जनजाति**

महाकौशल क्षेत्र की प्रमुख एवं जनसंख्या में विशालतम जनजाति, गोंड समुदाय मध्य प्रदेश, छत्तीसगढ़, महाराष्ट्र व उड़ीसा में विस्तृत है। इसकी समृद्ध सांस्कृतिक परंपरा में 'गोंड चित्रकला', पारंपरिक नृत्य, लोकगीत व वीरगाथाएँ सम्मिलित हैं। समाज

कबीलाई प्रणाली पर आधारित है, जिसका नेतृत्व सामूहिक निर्णय से होता है। यह कृषि एवं वनोपज पर निर्भर रहते हुए प्रकृति-पूजक है।

2. **बैगा जनजाति**

मंडला, डिंडोरी, बालाघाट व शहडोल में निवास करने वाली बैगा जनजाति 'वन के स्वामी' कहलाती है। यह प्रकृति पर पूर्णतः निर्भर रहते हुए जड़ी-बूटी व वन्य संसाधनों के संरक्षण में निपुण है। हल चलाना पाप मानने के कारण स्थानांतरी कृषि अपनाती है। आत्माओं, देवी-देवताओं व जादू-टोने में विशेष आस्था रखती है।

3. **कोरकू जनजाति**

होशंगाबाद, बैतूल व छिंदवाड़ा जिलों में निवासरत कोरकू जनजाति कृषि, पशुपालन एवं वनोपज पर निर्भर रहती है। सामुदायिक सहयोग इसकी विशेषता है। 'कोरकू' भाषा ऑस्ट्रो-एशियाटिक परिवार से संबद्ध है, जो इसकी सांस्कृतिक विशिष्टता को दर्शाती है। यह प्रकृति-पूजा में विश्वास रखती है।

4. **अन्य प्रमुख जनजातियाँ**

- **भिलाला** – भील समुदाय की शाखा, कृषि व पशुपालन में संलग्न।
- **कोल** – पारंपरिक रूप से कृषि व श्रमिक कार्यों में संलग्न।
- **पड़िहार व सहरिया** – मुख्यतः वनोपज पर निर्भर समुदाय।

जनजातीय संरचना और सामाजिक संगठन

महाकौशल क्षेत्र की जनजातियाँ अपनी विशिष्ट सामाजिक संरचना के लिए जानी जाती हैं। इनका पारंपरिक समाज सामूहिकता और सामंजस्य पर आधारित होता है। यहाँ प्रत्येक जनजाति की अपनी अलगअलग मान्यताएँ-, परंपराएँ और सांस्कृतिक नियम होते हैं, जो उनके सामाजिक जीवन को नियंत्रित करते हैं।

जनजातीय समुदायों में 'गोत' प्रणाली)Clan System) प्रचलित होती है, जिसमें प्रत्येक व्यक्ति अपने गोत्र के नियमों का पालन करता है। विवाह और पारिवारिक जीवन में सामाजिक नियमों का कठोरता से पालन किया जाता है। इस समाज में

बुजुर्गों का विशेष सम्मान किया जाता है, और निर्णय लेने में सामूहिक सहमति को प्राथमिकता दी जाती है। जनजातियों का पारंपरिक ज्ञान, विशेष रूप से औषधीय पौधों और प्राकृतिक चिकित्सा पद्धतियों से संबंधित है, जो आधुनिक विज्ञान के लिए भी अत्यंत उपयोगी सिद्ध हुआ है। इनका जीवन पूरी तरह से प्रकृति के संरक्षण और सहअस्तित्व के सिद्धांतों पर आधारित होता है-, जिससे यह क्षेत्र जैवविविधता और पारिस्थितिक संतुलन बनाए रखने में महत्त्वपूर्ण भूमिका निभाता है।

- महाकौशल के जनजातीय वीरों का योगदान

महाकौशल क्षेत्र की भूमि केवल प्राकृतिक संपदा और सांस्कृतिक विविधता के लिए ही प्रसिद्ध नहीं है, बल्कि यह वीरता, बलिदान और संघर्ष की भी गाथा कहती है। भारत के स्वतंत्रता संग्राम में इस क्षेत्र की जनजातियों ने न केवल अपनी सांस्कृतिक अस्मिता की रक्षा की, बल्कि ब्रिटिश शासन के खिलाफ सशस्त्र संघर्ष में भी महत्वपूर्ण भूमिका निभाई। रानी दुर्गावती, शंकर शाह और रघुनाथ शाह जैसे महान योद्धाओं ने अपने साहस, शौर्य और बलिदान से न केवल महाकौशल क्षेत्र बल्कि पूरे भारत के स्वतंत्रता आंदोलन को एक नई दिशा दी।

1. **रानी दुर्गावती का स्वतंत्रता संघर्ष**

रानी दुर्गावती (1524 ई.) गोंडवाना की वीरांगना थीं, जिन्होंने मुगलों के विरुद्ध अद्वितीय संघर्ष किया। कुशल शासक व रणनीतिकार होने के साथ, वे प्रजाप्रेम और युद्धकला के लिए विख्यात थीं। मुगल सम्राट अकबर के सेनापति आसफ खान के आक्रमण के समय, उन्होंने 24 जून 1564 को जबलपुर के निकट वीरतापूर्वक युद्ध किया। पराजय की आशंका में आत्मसमर्पण के बजाय आत्मबलिदान को चुना। उनका त्याग स्वतंत्रता और जनजातीय स्वाभिमान का प्रतीक बना, जिसने महाकौशल क्षेत्र की जनजातियों को प्रेरित किया।

2. **शंकर शाह और रघुनाथ शाह का बलिदान**

महाकौशल क्षेत्र के वीर बलिदानी शंकर शाह व रघुनाथ शाह ने 1857 के संग्राम में ब्रिटिश शासन के विरुद्ध विद्रोह का नेतृत्व किया। जबलपुर के गोंड राजा शंकर शाह ने जनजातीय समाज को संगठित कर क्रांति की ज्वाला प्रज्वलित की। ब्रिटिश सत्ता ने उन्हें गिरफ्तार कर 18 सितंबर 1857 को जबलपुर किले में तोप से उड़ा दिया। यह बलिदान स्वतंत्रता संग्राम की चेतना को और प्रखर करने वाला सिद्ध हुआ।

- अन्य प्रमुख जनजातीय योद्धाओं और उनके आंदोलनों का विवरण

महाकौशल क्षेत्र में रानी दुर्गावती, शंकर शाह और रघुनाथ शाह के अलावा भी कई वीर जनजातीय नेता हुए, जिन्होंने अपने साहस और बलिदान से स्वतंत्रता संग्राम में अमिट छाप छोड़ी।

1. **बिरसा मुंडा का योगदान**

हालाँकि बिरसा मुंडा का कार्यक्षेत्र मुख्य रूप से झारखंड और छत्तीसगढ़ रहा, लेकिन उनका प्रभाव महाकौशल क्षेत्र में भी देखा गया। उन्होंने 19वीं शताब्दी के अंत में ब्रिटिश सरकार के खिलाफ *"मूवमेंट"* चलाया, जिसे 'उलगुलान' कहा जाता है। उनका आंदोलन केवल राजनीतिक स्वतंत्रता तक सीमित नहीं था, बल्कि यह सामाजिक और आर्थिक स्वतंत्रता की भी मांग करता था।

2. **सिद्धूकान्हू और संथाल विद्रोह-**

सिद्धू और कान्हू संथाल जनजाति के दो वीर योद्धा थे, जिन्होंने 1855 में ब्रिटिश शासन के खिलाफ संथाल विद्रोह का नेतृत्व किया। यह विद्रोह किसानों और जनजातीय समाज के शोषण के विरुद्ध था। इस विद्रोह का प्रभाव महाकौशल क्षेत्र की जनजातियों पर भी पड़ा और यहाँ भी स्वतंत्रता संग्राम के प्रति चेतना जागी।

3. **तांत्या भील का संघर्ष**

तांत्या भील, जिन्हें 'भारतीय रॉबिनहुड' भी कहा जाता है, एक महान जनजातीय योद्धा थे, जिन्होंने ब्रिटिश शासन के खिलाफ छापामार युद्ध छेड़ा। वे गरीबों और किसानों के अधिकारों के लिए संघर्षरत रहे और उन्होंने ब्रिटिश सत्ता के खिलाफ अनेक हमले किए। उनके कार्यों से महाकौशल क्षेत्र के जनजातीय समुदायों में भी स्वतंत्रता संग्राम की भावना प्रबल हुई।

4. **नन्हू बैगा और बैगा विद्रोह**

बैगा जनजाति के वीर योद्धा नन्हू बैगा ने ब्रिटिश शासन के दमनकारी नीतियों के खिलाफ संघर्ष किया। उन्होंने अपने समुदाय को संगठित कर स्वतंत्रता संग्राम में भाग लिया। बैगा विद्रोह ब्रिटिश अधिकारियों के खिलाफ प्रतिरोध का प्रतीक बना और इस संघर्ष में अनेक बैगा योद्धाओं ने बलिदान दिया।

- स्वतंत्रता संग्राम में जनजातीय आंदोलनों का योगदान

भारतीय स्वतंत्रता संग्राम केवल शहरी बुद्धिजीवियों और राजनीतिक नेताओं तक सीमित नहीं था, बल्कि इसमें देश के ग्रामीण और जनजातीय समुदायों की भी महत्त्वपूर्ण भूमिका रही। विशेष रूप से महाकौशल क्षेत्र की जनजातियाँ, जिन्होंने अपनी परंपराओं और अस्मिता की रक्षा के लिए सदियों से संघर्ष किया था, स्वतंत्रता संग्राम में भी अग्रणी भूमिका में रहीं। ब्रिटिश शासन की दमनकारी नीतियों के विरुद्ध इन जनजातियों ने असहयोग आंदोलन, सविनय अवज्ञा आंदोलन और भारत छोड़ो आंदोलन में सक्रिय भागीदारी निभाई। इसके अतिरिक्त, महाकौशल में हुए अनेक जनजातीय विद्रोहों ने भी स्वतंत्रता संग्राम को एक नया आयाम दिया।

- असहयोग आंदोलन में जनजातीय सहभागिता

महात्मा गांधी द्वारा 1920 में प्रारंभ किए गए असहयोग आंदोलन ने देशभर में स्वराज की भावना को मजबूत किया। इस आंदोलन का प्रभाव जनजातीय क्षेत्रों में भी व्यापक रूप से देखा गया। महाकौशल क्षेत्र की जनजातियों ने भी ब्रिटिश शासन के विरुद्ध असहयोग प्रदर्शित किया।

- **महाकौशल के वन क्षेत्रों में रहने वाली जनजातियों ने अंग्रेज़ों द्वारा लगाए गए वन कानूनों के खिलाफ आंदोलन किया।**
- **गोंड, बैगा और कोरकू जनजातियों ने ब्रिटिश सरकार द्वारा लगाए गए करों और अत्याचारों का बहिष्कार किया।**
- **जनजातीय समुदायों ने ब्रिटिश शासन के आदेशों का पालन करने से इनकार कर दिया और अपने पारंपरिक कानूनों का पालन जारी रखा।**
- **महाकौशल के ग्रामीण क्षेत्रों में रहने वाले आदिवासी समुदायों ने विदेशी वस्त्रों का बहिष्कार कर स्वदेशी अपनाने की शपथ ली।**

हालाँकि इस आंदोलन को बाद में स्थगित कर दिया गया, लेकिन इसने जनजातीय समाज में राजनीतिक चेतना को जन्म दिया और भविष्य के आंदोलनों की नींव रखी।

- सविनय अवज्ञा आंदोलन में जनजातीय सहभागिता

1930 में जब महात्मा गांधी ने नमक सत्याग्रह के माध्यम से सविनय अवज्ञा आंदोलन प्रारंभ किया, तब इसका प्रभाव संपूर्ण भारत में देखने को मिला। महाकौशल की जनजातियों ने भी इस आंदोलन में अपनी सक्रिय भूमिका निभाई।

- **जनजातीय समुदायों ने ब्रिटिश सरकार के अन्यायपूर्ण करों का भुगतान करने से इनकार कर दिया।**
- **वन कानूनों के खिलाफ जनजातियों ने संगठित होकर अंग्रेजों के जंगलों पर अपने परंपरागत अधिकार को पुनः स्थापित करने का प्रयास किया।**
- **महाकौशल के बैगा और गोंड आदिवासियों ने नमक सत्याग्रह में भाग लिया और कई स्थानों पर सत्याग्रहियों को सहयोग प्रदान किया।**
- **इस दौरान अनेक जनजातीय नेताओं को गिरफ्तार किया गया और उन पर कठोर दंड लगाए गए।**

इस आंदोलन ने स्वतंत्रता संग्राम में जनजातीय समाज की भूमिका को और भी सशक्त बनाया तथा ब्रिटिश शासन के प्रति उनकी असहिष्णुता को और अधिक प्रबल किया।

- भारत छोड़ो आंदोलन में जनजातीय सहभागिता

1942 में जब महात्मा गांधी ने *"अंग्रेज़ों भारत छोड़ो"* का आह्वान किया, तब पूरे देश में क्रांति की ज्वाला भड़क उठी। इस आंदोलन में महाकौशल क्षेत्र की जनजातियाँ भी पीछे नहीं रहीं।

- **जनजातीय युवाओं ने ब्रिटिश सरकार के दफ्तरों, पुलिस थानों और सरकारी प्रतिष्ठानों पर हमले किए।**
- **जनजातीय विद्रोहियों ने अंग्रेज़ों के खिलाफ गुरिल्ला युद्ध की रणनीति अपनाई और जंगलों में छिपकर ब्रिटिश सेना पर आक्रमण किए।**
- **महाकौशल क्षेत्र के कई गाँवों ने ब्रिटिश प्रशासन का बहिष्कार किया और स्वशासन की स्थापना करने की कोशिश की।**

- **इस आंदोलन में अनेक जनजातीय नेताओं को फाँसी दी गई, जेलों में डाल दिया गया, और उनकी संपत्तियाँ जब्त कर ली गई।**

भारत छोड़ो आंदोलन ने ब्रिटिश सरकार को स्पष्ट संकेत दिया कि अब भारत में उनका शासन असंभव हो चुका है। जनजातीय समाज ने इस आंदोलन को अपना संघर्ष मानकर इसे अंतिम रूप से सफल बनाने के लिए अपना सर्वस्व बलिदान कर दिया।

- महाकौशल में हुए जनजातीय विद्रोह और उनके परिणाम

महाकौशल क्षेत्र में स्वतंत्रता संग्राम के दौरान कई जनजातीय विद्रोह हुए, जिन्होंने ब्रिटिश सत्ता को खुली चुनौती दी। इन विद्रोहों ने न केवल स्थानीय स्तर पर ब्रिटिश शासन को कमजोर किया, बल्कि राष्ट्रीय स्तर पर स्वतंत्रता संग्राम को नई दिशा भी दी।

1. गोंड विद्रोह

महाकौशल क्षेत्र में गोंड जनजाति की प्रमुखता रही है। 19वीं शताब्दी में जब ब्रिटिश सरकार ने इस क्षेत्र पर कब्जा करने की कोशिश की, तब गोंडों ने संगठित होकर विद्रोह किया।

- **गोंड राजा शंकर शाह और उनके पुत्र रघुनाथ शाह ने 1857 में स्वतंत्रता संग्राम का नेतृत्व किया।**
- **इस विद्रोह के दौरान कई ब्रिटिश सैनिकों को मार गिराया गया, लेकिन अंततः राजा और उनके पुत्र को पकड़कर जबलपुर के किले में तोप से उड़ा दिया गया।**
- **हालाँकि यह विद्रोह दबा दिया गया, लेकिन इसने जनजातीय समाज में स्वतंत्रता संग्राम की भावना को और अधिक प्रबल कर दिया।**

2. बैगा विद्रोह

महाकौशल क्षेत्र की बैगा जनजाति ने भी ब्रिटिश शासन के खिलाफ कई विद्रोह किए।

- **ब्रिटिश सरकार द्वारा लगाए गए वन कानूनों के विरोध में बैगा समुदाय ने व्यापक विद्रोह किया।**

- **जनजातीय समुदायों ने अंग्रेज़ों के खिलाफ हथियार उठाए और कई स्थानों पर उन्हें पराजित किया।**
- **इस विद्रोह को दबाने के लिए ब्रिटिश सरकार ने कठोर कदम उठाए और बैगा नेताओं को गिरफ्तार कर फाँसी दे दी गई।**

3. कोरकू विद्रोह

कोरकू जनजाति ने भी अपने पारंपरिक अधिकारों की रक्षा के लिए संघर्ष किया।

- **ब्रिटिश सरकार द्वारा जबरन लगान वसूली के खिलाफ इस समुदाय ने आंदोलन किया।**
- **जनजातीय समाज ने अंग्रेजों के खिलाफ संगठित होकर विद्रोह किया और कई प्रशासनिक भवनों को नष्ट कर दिया।**
- **इस विद्रोह को भी बलपूर्वक दबा दिया गया, लेकिन इसने अंग्रेज़ों के खिलाफ असंतोष को और बढ़ा दिया।**

निष्कर्ष (Conclusion)

भारतीय स्वतंत्रता संग्राम में जनजातीय समुदायों की भूमिका को केवल एक उपशाखा के रूप में नहीं देखा जा सकता, बल्कि यह संघर्ष की उस महान परंपरा का हिस्सा था, जिसने देश की स्वतंत्रता के लिए नींव तैयार की। महाकौशल क्षेत्र की जनजातियों ने न केवल अपने अधिकारों और अस्मिता की रक्षा के लिए संघर्ष किया, बल्कि उन्होंने ब्रिटिश शासन के दमनकारी नीतियों के विरुद्ध एक संगठित और सशक्त विद्रोह भी किया। रानी दुर्गावती, शंकर शाह, रघुनाथ शाह जैसे वीरों ने अपनी मातृभूमि की रक्षा के लिए सर्वोच्च बलिदान दिया। वहीं, गोंड, बैगा और कोरकू जनजातियों ने अपने पारंपरिक अधिकारों की रक्षा के लिए संगठित होकर ब्रिटिश सत्ता को चुनौती दी। असहयोग आंदोलन, सविनय अवज्ञा आंदोलन और भारत छोड़ो आंदोलन में जनजातीय समुदायों की सहभागिता ने स्पष्ट रूप से यह प्रदर्शित किया कि भारतीय स्वतंत्रता संग्राम केवल शिक्षित वर्ग तक सीमित नहीं था, बल्कि यह एक जनांदोलन था, जिसमें समाज के प्रत्येक वर्ग ने अपनी भूमिका निभाई।

महाकौशल क्षेत्र के जनजातीय विद्रोह न केवल अंग्रेज़ों के शोषण के खिलाफ प्रतिरोध थे, बल्कि यह भारत की सांस्कृतिक और सामाजिक संरचना की रक्षा के लिए भी किए गए संघर्ष थे। इन विद्रोहों ने स्वतंत्रता संग्राम को एक नई दिशा प्रदान की और यह सिद्ध किया कि भारत का प्रत्येक समुदाय इस महासंग्राम में अपने स्तर पर योगदान दे रहा था। आज जब हम

स्वतंत्र भारत में जीवन व्यतीत कर रहे हैं, तब यह आवश्यक है कि हम उन वीर जनजातीय योद्धाओं और उनके बलिदानों को याद रखें, जिन्होंने अपने प्राणों की आहुति देकर हमें स्वतंत्रता दिलाने में योगदान दिया। उनके संघर्ष और बलिदान को इतिहास के पन्नों में उचित स्थान देना और उनकी विरासत को संजोकर रखना हमारी नैतिक जिम्मेदारी है। यह न केवल इतिहास की सटीक प्रस्तुति होगी, बल्कि वर्तमान और भविष्य की पीढ़ियों को भी अपने सांस्कृतिक गौरव से जोड़ने का कार्य करेगी।

संदर्भ सूची -

1. ऐतिहासिक ग्रंथ)Historical Texts)

- चंद्र, विपिन। *भारत का स्वतंत्रता संग्राम*। पेंगुइन बुक्स, 1989।
- गुप्ता, रवींद्र कुमार। *भारतीय स्वतंत्रता संग्राम और आदिवासी आंदोलन*। नेशनल पब्लिशिंग हाउस, 2004।
- प्रसाद, राजेंद्र। *भारत विभाजित*। हिंद किताब्स लिमिटेड, 1946।
- ठाकर, रोमिला। *भारत का इतिहास*। ऑक्सफोर्ड यूनिवर्सिटी प्रेस, 2002।
- सेन, अमर्त्य। *तर्कशील भारतीयभारतीय इतिहास :, संस्कृति और पहचान पर लेखन*। फरार, स्ट्रॉस और गिरौक्स, 2005।

2. शोध) पत्र एवं लेख-Research Papers and Articles)

- शर्मा, एल.पी. *भारतीय राष्ट्रीय आंदोलन में जनजातीय योगदान*। भारतीय इतिहास अनुसंधान परिषद, 2010।
- वर्मा, एस के. "स्वतंत्रता संग्राम में महाकौशल.क्षेत्र के गोंड और बैगा जनजातियों की भूमिका।" *भारतीय समाजशास्त्र जर्नल*, खंड 24, अंक 3, 2015, pp. 112-128।
- मिश्रा, अजय। "रानी दुर्गावती और गोंडवाना का स्वतंत्रता संघर्ष।" *राष्ट्रीय इतिहास समीक्षा*, खंड 18, अंक 2, 2008, pp. 56-74।
- सिंह, प्रताप। शंकर शाह और र"घुनाथ शाह"जनजातीय बलिदान के प्रतीक। : *समाज और इतिहास जर्नल*, खंड 12, अंक 1, 2012, pp. 88-102।

3. अभिलेखीय स्रोत)Archival Sources)

- भारत सरकार, राष्ट्रीय अभिलेखागार। *1857 के विद्रोह में जनजातीय समुदायों की भूमिका* (राष्ट्रीय दस्तावेज़ संकलन, नई दिल्ली।(
- मध्य प्रदेश राज्य अभिलेखागार। *महाकौशल क्षेत्र के स्वतंत्रता संग्राम के दस्तावेज़*, भोपाल।
- ब्रिटिश शासनकाल के सरकारी राजपत्र और रिपोर्टें)1857-1947)।
- भारतीय पुरालेख विभाग। *स्वतंत्रता संग्राम में जनजातीय प्रतिरोधसरकारी अभिलेखों का विश्लेषण* :, कोलकाता।